वैदिक युग के महिलाओं की धार्मिक एवं शैक्षणिक स्थिति

डॉ. मनीष कुमार सिंह

प्राचीन काल में भारतीय महिला सर्वशक्ति संपन्न मानी गई थी। स्त्री–शिक्षा की दृष्टि से वैदिक काल को स्वर्ण युग माना जाता है। वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा का पूर्ण अधिकार था तथा समाज में उनका विशिष्ट स्थान था। कृषिकार्य, धनुर्वेद एवं अश्व संचालन के साथ–साथ मंत्रों का उच्चारण करने तथा वेदों का अध्ययन करने की पूरी स्वतंत्रता थी। महिलाओं में विद्या, यश, महत्त्व धीरे–धीरे इतना अधिक बढ़ा कि उसके बिना अकेला पुरुष अपूर्ण और अधूरा समझा जाता रहा। स्त्री–पुरुष की शरीरार्द्ध तथा अर्द्धांगिनी मानी गई है। पत्नी ही गृह है वही गृहस्थी तथा उसमें आनंद समाहित है। वैदिक काल में शिक्षा के क्षेत्र में कन्या को पुरुषों के समक्ष रखा गया था। कन्या को शिक्षा प्राप्ति के लिए विशेष अनुष्ठान का आयोजन किया जाता था। शिक्षा ग्रहण करने के दौरान वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थी। वैदिक युग में वही स्त्री–पुरुष विवाह के योग्य समझे जाते थे जो शिक्षित होते थे। वैदिक युग में ऐसी भी स्त्रियों का संकेत मिलता है, जो जीवन पर्यन्त विद्याध्ययन में लगी रहती थी और वह ''ब्रह्मवादिनी'' कही जाती थी।